भोमक्या

- अन्ना भाऊ साठे

- अनु. हसन यु. पठान

'भोमक्या, तेरा नाम भोमक्या ही है न?'

'हारी हारी! मुझे क्या पता?'

'तेरे बच्चे कितने हैं?'

'दो, हारी हारी!'

'तेरी बीवी कहां है?'

'हारी हारी! मुझे मालूम नहीं।'

'तेरी शादी कब हुई थी?'

'हारी हारी! मुझे नहीं पता।'

हम सब कैदी भोमक्या से सवाल पूछते रहते और उसके चारों ओर भीड़ जमा हो जाती। वह बेफिक्र होकर हंसी के साथ जवाब देता। वह भी अमरावती जेल में हमारे साथ कैदी था।

उसका रंग मिट्टी जैसा था, छोटा कद लेकिन थोड़ा मोटा शरीर। छोटी गर्दन, पतले पैर, बड़ा सा पेट, जो कि ढीला-ढाला और बेडौल था, जैसे किसी मेंढक का पेट। जब वह खड़ा होता, तो उसके पैर ऐसे दिखते जैसे किसी कद्दू में लकड़ी की टहनियाँ लगा दी गई हों। सिर पर जटाएँ थीं, और एक लंबी टोपी जो हाथभर ऊँची थी। उतनी ही लंबी उसकी दाढ़ी थी। पहनने के लिए सिर्फ एक लंगोटी थी। पूरे चेहरे पर बाल ही बाल थे, सिर्फ उसकी आँखें ही दिखाई देती थीं। वह ताल में चलता और चलते समय उसका पूरा शरीर हिलता-डुलता था। जेल का खाना आने तक वह उदास होकर बैठा रहता और किसी से बात नहीं करता। और जैसे ही खाना आता, वह चुपचाप खाना खाने लगता। फिर उसकी ज़बान खुल जाती, और वह मज़ाक करने लगता या फिर अपने करारे, कर्कश आवाज़ में नामस्मरण शुरू कर देता। उसकी आवाज़ सुनकर ऐसा लगता जैसे कोई बाघ गरज रहा हो।

हम सब उसकी बातों का बेसब्री से इंतजार करते। वह बहुत कम बोलता, इसलिए हमें बहुत बुरा लगता। लेकिन जब कभी वह बोलता, तो पूरा जेल ठहाके मारकर हँसता, पर वह अक्सर चुप ही रहता। जब उसका मन होता, तो वह अभंग गाने लगता:

'ठीक से बैठो और मन को लगाओ, पंढरी गूंज उठे।'

'नामा कहता है तुकाराम, तुकाराम, जनाबाई, मुक्ताबाई, भागूबाई, राधाबाई। तुका कहता है, यहाँ सच्चे लोग होने चाहिए, ये किसी बेकार के काम के लिए नहीं है।'

फिर सब हंसने और बात करने लगते। इस तरह भोमक्या सबको बहुत पसंद था।

सारे कैदी दो पंक्तियों में खड़े रहते और फिर जेल अधिकारी श्री घोटाले निरीक्षण के लिए आते। कैदी अपनी शिकायतें उनसे कहते।

एक बार हमारी पंक्ति खड़ी थी, और भोमक्या मेरे बगल में खड़ा था। घोटाले इधर-उधर देखते हुए चल रहे थे।

'साहब!' भोमक्या ने गला साफ करके कहा।

'क्या है? बोल।' घोटाले ने रुककर पूछा।

'मैं ऐसे कद्दू जैसा कितने दिन तक नंगा रहूँगा?' भोमक्या ने शिकायत की। सारे कैदी हंसने लगे।

'क्या मतलब?' घोटाले ने पूछा।

'नहीं, मेरा रंग काला था, अब पका कद्दू हो रहा हूँ, साहब।' भोमक्या ने कहा।

मुझसे हंसी रुकी नहीं, चारों ओर हंसी की लहर दौड़ गई। सब अपने हंसने को रोकने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन रोक नहीं पा रहे थे। पर भोमक्या बिल्कुल शांत चेहरे के साथ खड़ा रहा जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो, और घोटाले चकित होकर देख रहे थे, जैसे कुछ समझ नहीं आ रहा हो। कुछ कैदी अपने घुटनों को पकड़कर हंस रहे थे। घोटाले भी कन्फ्यूज हो गए। कैदियों से उन्हें गुस्सा आने लगा। वह गुस्से में चिल्लाए,

'खामोश!' घोटाले ने जोर से चिल्लाया और अपनी सैन्य चाल में पीछे हटने लगे; लेकिन उनका पैर फिसल गया और वह गिर पड़े।

और तभी भोमक्या भी हंसने लगा। उसने अपनी जबान बिल्ली की तरह फैलाई और जम्हाई जैसा मुँह बनाने लगा।

उसके उस हंसते हुए रूप को देखकर फिर से हंसी की बाढ़ आ गई। घोटाले चिढ़ गए।

'मैं कह रहा हूँ, खामोश!' घोटाले चिल्लाए। चारों ओर शांति छा गई।

'हां, क्या रे?' घोटाले ने भोमक्या से पूछा।

'साहब, कुछ पहनने के लिए दीजिए।'

'ऑफिस में क्या कुछ जप्त हुआ है क्या?'

'मेरा एकतारा तो रख लिया है। बाकी कपड़े तो थे नहीं। तो और क्या ले सकते थे? यह लंगोटी उन्होंने नहीं ली। और लेते भी तो क्या करते?' भोमक्या ने अपनी लंगोटी की ओर इशारा करते हुए कहा। फिर चारों ओर हंसी छूट गई और घोटाले गुस्से में चले गए।

थोड़ी ही देर में एक वार्डर आया और उसने भोमक्या को एक नई चड्डी और बनियान दी। भोमक्या बहुत खुश हुआ। जीवन में उसे कभी नई चमचमाती चड्डी और बनियान मिली ही नहीं थी।

'अब मैं इस लंगोटी को फेंक दूँगा,' वह बुदबुदाया।

शाम के छह बज गए। हम सब बैरक में बंद होने का इंतजार कर रहे थे। बंद होना हमें बिल्कुल भी पसंद नहीं था, लेकिन उसके सिवा कोई चारा नहीं था।

हम बंद हो गए। भोमक्या अपनी चड्डी और बनियान बगल में दबाए अंदर आया। उसे उन्हें पहनने की जल्दी थी। आज वह बहुत खुश दिख रहा था। उसने अपने कपड़े बदलने का काम शुरू किया। मेरा या किसी का ध्यान उसकी ओर नहीं था।

'पाटील, मैं कैसा लग रहा हूँ?' भोमक्या ने मुझसे पूछा। और फिर से हंसी के फव्वारे छूटने लगे। कैदी हंस-हंसकर लोटपोट हो गए। भोमक्या की बनियान उसकी छाती पर इतनी तंग थी कि वह किसी बड़ी औरत के शरीर पर बच्ची की चोली जैसी लग रही थी। इस वजह से वह खुद को असहज महसूस कर रहा था, और अपने हाथ ऊपर उठाए खड़ा था। नीचे चड्डी का भी वही हाल था। वह उसकी जांघों को कसकर पकड़े हुए थी, जिससे भोमक्ये को ऐसा लग रहा था जैसे उसकी टांगें किसी फंदे में फंस गई हों। उसे सांस लेना भी मुश्किल हो गया और वह गिरने जैसा महसूस करने लगा। उसके आसपास के कैदी हंसी से लोटपोट हो रहे थे।

ऐसा लग रहा था, जैसे किसी बिल्ली ने दूध के बर्तन में अपना सिर डाल लिया हो और फिर उसका सिर उसमें फंस गया हो, ठीक वैसे ही भोमक्या भी फंस गया था। थोड़ी देर बाद वह नीचे गिर पड़ा और तड़पने लगा। वह थक कर हांफने लगा।

जब सभी को यह एहसास हुआ कि स्थिति वाकई खराब हो गई है और भोमक्या खतरे में है, तब दो पठान कैदी उठे। उन्होंने भोमक्या की बनियान को ऐसे उतारा जैसे कसाई बकरे की खाल उतारता है। दो अन्य कैदियों ने उसकी चड्डी भी वैसे ही उतारी। भोमक्या की मुक्ति हो गई। उसने चैन की सांस ली। वह थका-हारा वहीं पड़ा रहा, उसका भारी पेट धीरे-धीरे धौंकनी की तरह ऊपर-नीचे हो रहा था। उसकी आँखों में निराशा भर गई। हमारे कैदियों की हंसी गायब हो गई। जिस कमरे में कभी भारत के पूर्व गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी शांति से भारतीय उन्नति और प्राचीन संस्कृति के ग्रंथ पढ़ते थे, उसी कमरे में भारतीय संस्कृति का एक वारिस भोमक्या निढाल पड़ा था। चड्डी और बनियान ने उसकी हालत बिगाड़ दी थी।

बाहर अंधेरा फैल गया था। वीरान जेल की दीवारें पहरेदारी कर रही थीं। सब कुछ बंद हो गया था, जैसे प्रकृति की हर हलचल भी वहां रुक गई हो। वहां बोलना बंद था, चलना बंद था, गाना बंद था। वहां

निगाहें भी रुक गई थीं। सब कुछ थमा हुआ था। केवल कठोरता, डर, भयानकता और क्रूरता का साम्राज्य चल रहा था। हजारों जीवन डर के साए में निःसहाय पड़े थे। वहां बच्चों की कोमल रोना, खिलखिलाना, पक्षियों की चहचहाहट या मुर्गे की बांग सुनने की कोई संभावना नहीं थी। हर घंटे एक कर्कश आवाज आती, 'साठ कैदी ऑलबेल!' जेल के बीच में लगी विशाल घंटी गूंजती, उसकी आवाज दूर तक जाती। बराक के बाहर बरामदे में पहरेदार अपने पैरों को जोर-जोर से पटकते हुए पहरा दे रहे थे। सभी कैदी निश्चिंत होकर सो रहे थे, कुछ तालबद्ध तरीके से खर्राटे ले रहे थे।

'पाटील, तुम्हें नींद क्यों नहीं आ रही?' भोमक्या ने बड़ी जम्हाई लेते हुए मुझसे पूछा।

'नहीं, मैं सोच रहा हूँ,' मैंने जवाब दिया।

'मुझे भी नींद नहीं आ रही,' उसने शिकायत की।

'भोमक्या, तू जेल में कैसे आया?' मैंने पूछा।

उसने एक लंबी सांस ली।

'तुम्हें कैसे लाए?' उसने मुझसे पलटकर सवाल किया।

'मुझे पुलिस लाकर छोड़ गई, इसलिए मैं आया,' मैंने कहा।

'जैसे तुम्हें लाए, वैसे ही मुझे भी लाए,' उसने कहा।

फिर उसने अपनी पूरी कहानी सुनाई। लेकिन वह यह नहीं बता पाया कि उसकी जाति क्या है, उसका गांव कौन सा है, या उसके पिता का नाम क्या है।

भोमक्या एक इंसान था, और उसका बेढब, अजीबोगरीब शरीर समाज की उस अंदरूनी सच्चाई को चीख-चीखकर बयान कर रहा था, जो प्रतिष्ठा के नकाब के पीछे छिपी रहती है। उसने काम ढूंढने के लिए नागपुर से मुंबई तक दौड़ लगाई, लेकिन जहां भी गया, उसे कहीं काम नहीं मिला। उसकी गरीब हालत देखकर लोग उसे तिरस्कार से भगा देते।

फिर उसने भीख मांगनी शुरू की। घर-घर जाकर रोटी मांगने लगा। रोटी मांगकर जीने लगा। कुछ जगहों पर उसने कपड़े भी मांगे। कुछ समय तक यह ठीक चला, लेकिन फिर मुश्किलें आईं। उसे एहसास हुआ कि कपड़े मांगकर उसने गलती की है, क्योंकि जब से उसने दूसरों से मिले कपड़े पहनना शुरू किया, तब से उसके लिए और भी मुश्किलें आने लगीं। हर घर के लोग उसे तुच्छ नजरों से देखने लगे।

'अगर ठीक से कपड़े पहनोगे, तो तुम्हारे दो होंगे। काम करो।'

'अरे, तुम्हारे हाथ-पैर नहीं हैं? ठाठ से कपड़े पहनकर भीख मांगते हो? जाओ आगे बढ़ो।'

लोग ऐसे-ऐसे सवाल करने लगे, और इस वजह से उसका पेट भूख से मरने लगा।

उसने सोचा, जितना मैं दरिद्र और दयनीय रहूँगा, उतना ज्यादा दिन जी पाऊँगा। अगर अच्छे कपड़े पहनूँगा, तो लोग रोटी नहीं देंगे। और अगर रोटी चाहिए, तो कपड़े पहनने की कोई जरूरत नहीं। भिखारी को कपड़े क्यों चाहिए? अगर कपड़े पहनोगे, तो कोई भी भीख नहीं देगा। उसने फैसला किया कि उसे या तो कपड़े पहनने चाहिए या भीख मांगनी चाहिए, दोनों नहीं हो सकते। क्योंकि वह भिखारी था। अगर वह इंसान होता, तो उसे काम मिलता। लेकिन वह इंसान नहीं था, इसलिए उसे काम नहीं मिला, और काम नहीं मिला, इसलिए खाना नहीं मिला। और जब खाना नहीं मिला, तो उसे भीख मांगनी पड़ी। और अगर भीख मांगनी है, तो कपड़े क्यों पहनना? भिखारी कपड़े नहीं पहनते। उसने तय किया कि वह नग्न ही रहेगा।

भोमक्या यह सब सोचते हुए घूमता रहता था। एक बार उसे एक पुराना बर्तन मिला। उसने उसमें एक छेद किया, उसमें एक डंडी लगाई और उस पर एक तार लगाकर उसे एकतारे जैसा बना लिया। फिर वह जो कुछ भी मन में आता या कहीं से सुना हुआ होता, गाने लगता। दिनभर भीख मांगने के बाद, शाम को एक धर्मशाला में जाकर रहता।

एक दिन एक शादी में भोमक्ये को बहुत सारा खाना मिला। वह उसे लेकर धर्मशाला में आकर बैठ गया। अंधेरा गहरा हो चुका था, आंखों के सामने हाथ रखो तो भी कुछ दिखाई न दे। वह बेतहाशा तरीके से टटोल-टटोल कर वह खाना खा रहा था। वहां कोई रोशनी नहीं थी, न पानी, न कोई और इंसान। बस उसके मुंह की आवाजें सुनाई दे रही थीं। वह बड़े चाव से खा रहा था।

'क्या मुझे थोड़ी रोटी मिल सकती है?' अचानक एक महिला की आवाज आई।

'अरे, कौन हो तुम?' भोमक्याने अंधेरे में आंखें फाड़ते हुए पूछा।

'मैं भिखारी हूँ,' अंधेरे से आवाज आई।

'हां, लेकिन आदमी हो या औरत?' उसने अपना जबड़ा चलाना बंद करके पूछा और चुपचाप जवाब की प्रतीक्षा करने लगा।

'औरत?' भोमक्या बड़बड़ाया। उससे आगे कुछ बोला नहीं जा रहा था, क्योंकि वो 'अरे जाओ, काम करो!' कह नहीं सकता था। उसने सोचा और चावल की एक मुट्ठी भरी।

'अरे, तुम कहां हो?' वह गुर्राया।

'मैं यहीं हूं, बढ़ाओ,'

उसने चावल दिया। वे दोनों खाना खा चुके थे।

'अरे, तुम्हारा नाम क्या है?' भोमक्याने पूछा।

'सुंदरी।'

'तुम्हें आज कुछ नहीं मिला?'

'नहीं,' सुंदरी ने कहा।

'ठीक है, कल से मेरे साथ आना। आओगी?'

'हां, हां! लेकिन तुम्हारा नाम?'

'मेरा नाम भोमक्या है। अब सो जाओ।'

उस दिन से भोमक्या और सुंदरी भीख मांगने लगे। भीख मांगते-मांगते उनके दो बच्चे हो गए।

एक बार भोमक्या एक धर्मशाला में ठहरा। दिन सर्दियों के थे। सुंदरी और बच्चों को धर्मशाला में छोड़कर वह अकेला बाहर निकला। उसने तार वाला वाद्य चढ़ाया और ठंड से कांपते हुए भीख मांगने लगा। उसका अभंग शुरू हो गया। ठंड उसे सता रही थी। पातेल्ये (कटोरे) की तार बज रही थी और वह मनमाने देवताओं का नाम ले रहा था। एक घर से एक अमीर आदमी बाहर निकला। उसने भोमक्ये की भयानक हालत देखी और अपनी जेब से दो पैसे निकालकर भोमक्या को दे दिए। भोमक्या खुश हो गया। उसने उस दयालु व्यक्ति का धन्यवाद किया।

आगे चलकर भोमक्या हर रोज अपनी भीख की शुरुआत उसी दयालु व्यक्ति के दरवाजे से करने लगा। एक, दो, और तीन दिन बीत गए। चौथे दिन वह दयालु व्यक्ति अचानक निर्दयी बन गया। उसने गुस्से में भोमक्या को लात मारी और 'अगर फिर कभी यहां पैर रखा तो मार डालूंगा!' कहकर धमकी दी। भोमक्ये को उस आदमी पर आश्चर्य हुआ। उसने तय किया कि अब उस दरवाजे पर कभी नहीं जाएगा।

और उस दिन की घटना के बाद अगले दिन भोमक्ये पर बड़ा संकट आ पड़ा।

भोमक्या भीख मांगकर आया था। सुंदरी और उसके दोनों बच्चे बैठे थे। उन्हें खुशी हुई थी। जब भी भोमक्या भीख से लौटता, तो उन्हें खुशी होती, क्योंकि वह बारह घरों से बारह तरह की चीजें लाता और अपने बच्चों को देता। आज भी उसने बहुत कुछ लाया था। वह झोले में हाथ डालकर एक-एक चीज निकालकर दे रहा था। बच्चे मस्ती से खा रहे थे।

अंधेरा हो रहा था। रात जैसे आंखें बंद कर रही थी। सब कुछ अंधेरे में समा रहा था। दूर-दूर तक जगह-जगह दीये टिमटिमा रहे थे। बीच-बीच में लोगों की आवाजें सुनाई दे रही थीं। लेकिन धर्मशाला में कोई जोर से नहीं बोल रहा था। कोनों में भिखारी चुपचाप बैठे थे। उनके चारों ओर अंधेरा फैला हुआ था। उनकी आंखों में, उनके सामने, हर जगह अंधेरा ही अंधेरा था। अंधेरे के अलावा वहां कुछ और दिखाई नहीं दे रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे यह दुनिया अंधेरे में डूब रही हो। अंधेरे में ही हवा सरसराहट कर रही थी। अंधेरे में ही ठंड दांत काट रही थी। अंधेरे में ही मच्छर गुनगुना रहे थे। और अंधेरे में ही भोमक्ये के बच्चे खाना खा रहे थे। अचानक उस अंधेरे में टॉर्च की रोशनी चमकी, सीटी बजी और जूतों की आवाज हुई। एक पल के लिए वह धर्मशाला कांप उठी। सभी भिखारी डर गए। भोमक्ये के बच्चे डरकर अपनी मां की आंचल में छिप गए। धर्मशाला में डरावनी हवा फैल गई।

'यही है वो,' एक आदमी चिल्लाया। सभी टॉर्च की रोशनी भोमक्ये पर टिक गई। भोमक्या उठकर खड़ा हो गया। उसके कंधे पर उसका तार वाला वाद्य लटक रहा था। अचानक दस-बारह मजबूत लोगों ने उस पर हमला कर दिया और उसे घसीटकर बाहर ले गए। अगले ही क्षण सब जगह शांति छा गई। भोमक्ये को मरे हुए कुत्ते की तरह घसीटा जा रहा था। उसकी हल्की-हल्की आवाज सुनाई दे रही थी, लेकिन वह भी पलभर में बंद हो गई। उसके बच्चे रोने लगे। सुंदरी रोने लगी। और धर्मशाला के कोनों में छिपे सभी लोग धीरे-धीरे बोलने लगे। उसी समय, भोमक्या रोशनी में खड़ा था। हर तरफ बिजली की रोशनी जल रही थी। बड़े-बड़े पुलिस अधिकारी बैठे थे और भोमक्ये को लोहे की बेड़ियों से जकड़ दिया गया था। पहले दो दिन हर रोज दो-दो पैसे दान देने वाला दयालु व्यक्ति एक कुर्सी पर बैठा था। भोमक्या दुखी हो गया। वह मन ही मन कहने लगा, 'यही है वह दयालु व्यक्ति। इसी ने मुझे दो दिन दो-दो पैसे दिए थे और तीसरे ही दिन लात मारने की धमकी दी थी। अब यह मेरे साथ क्या करेगा?' उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था।

'सर्कल साहब, यही वह आदमी है! यह उस दिन सुबह आया था और शाम को डकैती डाली थी,' वह अमीर आदमी गरज उठा।

'ठीक है। तो यह भिखारी के भेष में डाकू है! इसे गिरफ्तार करो,' सर्कल साहब ने हुक्म दिया। भोमक्या कैदी बन गया।

और अब वह मेरे बगल में लेटा था। वह बात करते-करते सो गया। मैं, हालांकि, सोच में डूबा था। मैं इस पूंजीवादी दुनिया से न्याय की उम्मीद नहीं कर रहा था। मुझे इसका अनुभव हो चुका था। मैं भी एक गंभीर आरोप के तहत कैद था।

मैं सोच रहा था, भोमक्ये के बारे में और उसके नाम के बारे में।

भोमक्या इंसान है।

लेकिन समाज में उसका स्थान क्या है?

और मराठी भाषा में उसके नाम का मतलब क्या है? यह किस भाषा का नाम है? यह किससे उत्पन्न हुआ?

मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।

बाहर विशाल घंटी बज रही थी। 'ऑल बेल' की आवाज आ रही थी। जैसे हर घंटे उस क्रूर भय की याद दिलाई जा रही हो। मुझे नींद नहीं आ रही थी।

मैं उसके नाम का अर्थ नहीं समझ पा रहा था। मैं गुस्से में था। खुद पर गुस्सा आ रहा था। मैंने बहुत सारी मराठी किताबें पढ़ी थीं। कई शब्दकोश देखे थे। लेकिन उस नाम का अर्थ क्यों नहीं समझ पा रहा था?

'कुछ नहीं। भारतीय संस्कृति का ढिंढोरा पीटने वालों के दिमाग में भारतीय गुलामी और गरीबी से ठुंसा हुआ पत्थर ही यह भोमक्या है!' मैंने गुस्से में बड़बड़ाया और कंबल में सिर छिपाकर ऐसे लेट गया जैसे मर गया हो।

अनुवादक : **हसन यु. पठान**, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
भाषा एवं साहित्य संकाय, सेंट जोसेफ विश्वविद्यालय, बेंगलुरु - 560 027.
G-mail: pathanhasan@sju.edu.in